सामाजिक शोध का अर्थ किसी सामाजिक समस्या को सुलझाने या किसी प्राक्कल्पना की परीक्षा करने, नवीन घटनाओं का खोजने या कतिपय घटनाओं के बीच नवीन सम्बन्धों को ढूँढने के उद्देश्य से किसी यथार्थ विधि का उपयोग है। यह यथार्थ विधि इस प्रकार की होनी चाहिए जो कि वैज्ञानिक शर्तों को पूरी करती हो तथा जिसकी सहायता से अनुसन्धान किये गये विषय का सत्यापन हो।

दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि, सामाजिक शोध वह क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन-विधि है जिसके आधार पर सामाजिक घटनाओं के सम्बन्ध में हम नवीन ज्ञान की प्राप्ति करते हैं या विद्यमान ज्ञान को विस्तृत या परिष्कृत करते हैं एवम् विभिन्न घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों की व उपलब्ध सिद्धान्तों की पुनः परीक्षा करते हैं। और संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक घटनाओं या विद्यमान सिद्धान्तों के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान के प्राप्ति के लिए प्रयोग में लाई गई वैज्ञानिक विधि सामाजिक शोध है।

अतः स्पष्ट है कि सामाजिक शोध, वैज्ञानिक नियमानुसार, उस मानवीय क्रियाकलाप (Human activity) की ओर संकेत करता है जिसके द्वारा

सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में हमारे ज्ञान की वृद्धि सम्भव होती है तथा अनेक घटनाओं व उनके कारणों के सम्बन्ध में हमें वैज्ञानिक शोध प्राप्त होता है और साथ ही उन घटनाओं व उनके कारणों में पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में हम नवीन जानकारी प्राप्त करते हैं।
सामाजिक शोध के विषय में सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि ज्ञान प्राप्ति की वह विधि है जो कि निरीक्षण, वर्गीकरण, प्रयोग तथा निष्कर्षीकरण की सामान्य वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होती है और उसी पद्धति के द्वारा न केवल अज्ञात सामाजिक घटनाओं को खोजा जाता है अपितु ज्ञात सामाजिक घटनाओं की भी विवेचना या विश्लेषण किया जाता है। इस अर्थ में सामाजिक शोध वैज्ञानिक अनुसन्धान का ही एक विशेष रूप है जिसका कि सम्बन्ध सामाजिक तथ्यों, घटनाओं, मानवीय क्रियाकलाप तथा उसमें पाये जाने वाले अन्तः सम्बन्धों से होता है। सामाजिक शोध सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में सत्य की खोज करने की एक वैज्ञानिक विधि है।